ISSN: 2456–5474 RNI No.UPBIL/2016/68367 Vol-4* Issue-1* February- 2019
Innovation The Research Concept

शांति शिक्षा की अवधारणा एवं आवश्यकता (वैश्वीकरण के संदर्भ में)

साधना पाण्डेय
एसोसिएट प्रोफेसर,
शिक्षाशास्त्र विभाग,
महिला महाविद्यालय (पी0जी0) कालेज,
किदवई नगर, कानपुर

सारांश

शांति एवं सद्भाव किसी भी देश की बुनियादी आवश्यकता है। देश के नागरिक स्वयं को तभी सुरक्षित अनुभव कर सकते हैं जब माहौल को शांतिपूर्ण बनाये रखा जाये। राष्ट्रपिता महात्मा गांधी ने एक बार कहा था– ''मैं नहीं चाहता, कि मेरा घर सब तरफ खड़ी हुयी दीवारों से घिरा रहे और उसके दरवाज़े एवं खिड़कियाँ बंद कर दी जायें। मैं तो यही चाहता हूँ कि मेरे घर के आसपास देश–विदेश की संस्कृतियों की हवा बहती रहे'' गांधी जी का यह कथन वैश्वीकरण की अवधारणा का सार प्रस्तुत करती है। वैश्वीकरण के कारण देश में आर्थिक, सामाजिक, शैक्षिक व सांस्कृतिक आदि सभी क्षेत्रों में परिवर्तन हुआ है। इन परिवर्तनों ने हमारे शिक्षातंत्र को अत्यधिक प्रभावित किया है, इसी क्रम में शिक्षक, छात्र की भूमिका में भी बदलाव आया है। वर्तमान में शांति शिक्षा को व्यक्तिगत, पारिवारिक, सामाजिक, सांस्कृतिक तथा वैश्विक रूप से अपनाने की आवश्यकता है, क्योंकि आज उच्च शिक्षा में सूचना प्रौद्योगिकी के प्रयोग ने शिक्षा की परम्परागत प्रणाली में अत्यधिक परिवर्तन ला दिया। अतः शांति–शिक्षा को पाठ्यक्रम में शामिल करने से कई प्रकार की गम्भीर समस्याओं को हल किया जा सकता है जैसे– छात्रों में बढ़ती हिंसा, अनुशासन में कमी, तनाव, कुंठा, अवसाद एवं कुसमायोजन इत्यादि। इस हेतु विद्यार्थियों को शांति शिक्षा के आवश्यक ज्ञान के प्रति जागरूक करके उस ज्ञान को व्यवहार में अनुकूलन करने हेतु आवश्यक कौशलों का प्रशिक्षण दिया जाये। शंति शिक्षा, मानवता की शिक्षा देने वाला संप्रत्यय है। शांतिमय जीवन व्यतीत करने वाले व्यक्ति को निर्माण करना ही शांति शिक्षा का उद्देश्य है।

शांति एवं सद्भाव देश में जितना अधिक होगा, उतना ही अधिक विकास होगा। शांति शिक्षा की मनोवैज्ञानिक रूप से आवश्यकता सबसे अधिक है, क्योंकि आज के किशोर एवं युवा विद्यार्थियों के भीतर एक अजीब सी उलझन सदैव विद्यमान रहती है, क्योंकि यह अवस्था, तनाव, तूफान एवं संघर्ष की अवस्था है जहाँ संवेगात्मकता, आक्रमकता सदैव बोलबाला रहता है। शांति शिक्षा के माध्यम से विद्यार्थियों में मानवीय आदर्शों, गुणों व व्यवहारों के प्रतिमानों के अनुसार व्यवहार कर सकारात्मकता का विकास किया जाये। शांतिपूर्ण जीवन जीने हेतु स्वयं में कई कौशलों को अपनाना पड़ता है जैसे– सकारात्मक विचार, निर्णय क्षमता, दृढ़ निश्चय, सहानुभूतिपूर्वक सुनना, आपसी वार्तालाप में अपनापन, आत्मविश्वास, समालोचनात्मक विचार प्रक्रिया इत्यादि। अस्तु कहा जा सकता है कि सम्पूर्ण शिक्षा शांति के लिये ही है।

मुख्य शब्द : वैश्वीकरण, भौतिकतावादी जीवन शैली।

प्रस्तावना

"All Education is for Peace" – Maria Montessori"

वर्तमान समय में हमने चहुँ ओर विकास और सफलता तो प्राप्त कर ली है परन्तु नैतिकता, आध्यात्मिकता एवं चारित्रिक स्तर पर हम अभी भी रूग्णावस्था में हैं। सांवेगिक स्तर पर हम अस्थिर हैं। भौतिकतावादी जीवन शैली ने हमारे मूल्यों का विनाश कर दिया। सहनशीलता, आत्मसंयम, धैर्य, गम्भीरता, विनम्रता, स्वस्थ चिंतन जैसे सद्गुणों से हम दूर

हो गये। फलस्वरूप विभिन्न प्रकार की नकारात्मक मानसिक स्थितियों जैसे–तनाव, चिंता, हताशा, कुंठा ने हमारे जीवन में प्रवेश कर लिया। वैश्वीकरण के इस युग में जीवन में आध्यात्मिकता, नैतिकता, चारित्रिक बल की उपस्थिति शून्य हो गई है। इसलिये हमें आज शांति शिक्षा की अवधारणा को समझना होगा।

महात्मा गांधी जी ने कहा था कि– "If we are to teach real peace in the world we shall have to begin with children."

एडवर्ड बेंटवर्थ बैटी, चांसलर मैकगिल विश्वविद्यालय, कनाडा ने विश्वविद्यालय के स्नातकों के समक्ष 26 मई 1926 को अपने भाषण में कहा था–''हमने उन आध्यात्मिक मूल्यों पर ध्यान देना लगभग बन्द कर दिया है, जिनके द्वारा ही मानव की सम्पूर्ण प्रगति को आंका जा सकता है। प्रथम विश्व युद्ध ने मानवता की प्रगति के सर्वोत्कृष्ट युग का अन्त कर दिया और युद्ध का कारण इतना ही था कि हम भौतिकता के प्रति अपनी लालसा को नियंत्रित करके अधिक ऊँचे न उठ सके। मुझे यह न बताइये कि युद्ध जर्मनी की विजय–लोलुपता या अंग्रेजों की साम्राज्यवादिता या फ्रांसीसी सांग्रामिकता या लाभ प्राप्त करने की पूंजीवादी लालसा के कुपरिणाम से अधिक कुछ न था। ब्रिटेन ने संसार को व्यवस्था और भौतिक सभ्यता प्रदान की। जर्मनी और फ्रांस ने कला और संगीत से संसार की शोभा बढ़ाई, विज्ञान और साहित्य से उसका कोष भरा। पूंजीवादियों को लाभ युद्ध के कारण मिला–वह स्वयं युद्ध का कारण नहीं था। हमें और गहराई से उतरना ही चाहिये। जिस पागलपन ने संसार को महायुद्ध के रक्तपात तथा विभीषिकाओं में डुबो दिया, ''वह आत्मा का विकार है–मस्तिष्क का नहीं।'' इन शब्दों के कहे जाने के बाद भी एक और विश्वयुद्ध हो चुका है तथा हम भविष्य के प्रति आशंकित हैं।

डॉ0 सर्वपल्ली राधाकृष्णन् ने कहा, कि बैटी के इस कथन, कि 'हमारी आत्मा में विकार है, मस्तिष्क में नहीं' का अर्थ यह है कि शरीर, मस्तिष्क तथा आत्मा तीनों के स्वाभाविक सामंजस्य के निर्वाह से ही व्यक्ति और राष्ट्र सुखी हो सकते हैं। आज के युग में आध्यात्मिक मूल्यों को भुलाकर हम मस्तिष्क की उपलब्धियों पर अधिक बल देते हैं, और इसी कारण हम दुखी हैं। आत्मिक शक्तियां कम होती जा रही हैं तथा मस्तिष्क की उपलब्धियों का अनुपात भयोत्पादक सीमा तक पहुंच गया है। प्रत्यक्षतः हम पृथ्वी और आकाश को अपने अधिकार में किये हुए हैं और परमाणु तथा तारों के रहस्यों को समझने जगे हैं। फिर भी हम आशंका से घिरे हुए हैं। इसी आशंका ने विश्व को 'शान्ति शिक्षा' के लिये मांग करने को बाध्य कर दिया है।

शान्ति की अवधारणा

प्रायः हम यह कहते रहते हैं कि हाइड्रोजन बम शान्ति–स्थापना का अस्त्र बन सकता है क्योंकि उसकी विनाश क्षमता युद्ध को रोकने में समर्थ है। वस्तुतः युद्ध की अनुपस्थिति ही शान्ति नहीं है। यह एक सुदृढ़ बन्धुत्व–भावना का विकास है, अन्य लोगों के विचारों तथा मूल्यों को ईमानदारी से समझने का प्रयास है। बैटी ने अपने समय के नौजवानों को सलाह दी थी कि वे क्रोध कम करें, दूसरों की भर्त्सना न करें, दूसरों के उत्कृष्ट अंश पर विश्वास करने को तैयार रहें, सहज ज्ञान और करूणा जैसे गुणों का विकास करें। ये सभी गुण शान्ति एवं संतोष के आधार हैं।

शान्ति शिक्षा को 1980 के प्रारम्भ में वेल्स के अन्तर्राष्ट्रीय कॉलेज में प्रस्तावित किया गया। प्रायः शान्ति शिक्षा को तीन रूपों में प्रस्तुत किया गया है, यथा–

शान्ति के विषय में शिक्षा

इस दृष्टिकोण से शान्ति शिक्षा 'युद्ध की समालोचना' है। इस दृष्टिकोण का प्रतिपादन मितबक ओकामोटो ने किया।

शान्ति के लिये शिक्षा

यह एक सकारात्मक अवधारणा है। इसके द्वारा व्यक्ति में अहिंसा की आधारशिला का निर्माण किया जाता है। यह अर्थ इस तथ्य पर अवलम्बित है जब युद्धों को मानव मस्तिष्कों में जन्म दिया जाता है तब उनमें शान्ति की दीवारों को क्यों नहीं निर्मित किया जाना चाहिये''। अतः शान्ति शिक्षा का इस दृष्टिकोण से अभिप्राय यह है कि मानव के मस्तिष्क में शान्ति की दीवारों का निर्माण किया जाये।

सकारात्मक शान्ति

इसका अभिप्राय है अहिंसात्मक सामाजिक पद्धति। अर्थात् ऐसा समाज जिसमें हिंसा, शोषण, असमानता आदि न हों वरन् वह शोषण एवं अन्याय से मुक्त हो। इस दृष्टि से शान्ति शिक्षा एक सहयोगी समाज की स्थापना है।

डॉ0 सर्वपल्ली राधाकृष्णन् का कहना है, ''हम सार्वभौम मानवतावादी नये युग के ऊषाःकाल में है। आशा की उत्तेजना है, आंकाक्षाओं की हलचल है, जैसा प्रातःकाल में, जब भोर की किरणें पृथ्वी को जगाती हैं, होता है। विभिन्न राष्ट्रों को मानव जाति के सदस्यों के रूप में शत्रु–इकाईयों के समान नहीं बल्कि सभ्यता को विकसित करने के प्रयास में संलग्न मित्र–भागीदारों के समान रहना होगा। शक्तिशाली राष्ट्र कमजोर की सहायता करेगा और सारे मानव स्वतंत्र राष्ट्रों के विश्वव्यापी संघटन के सदस्य होंगे। यदि हम गैर जिम्मेदार व्यक्तियों के नियंत्रण और अब तक अकल्पनीय शक्ति–स्त्रोतों के खतरे से बच गये

तो हम सभी जातियों को एकत्र करके एक उदार, विशाल, सहयोगी समाज की स्थापना कर सकेंगे।'' शान्ति शिक्षा इन खतरों से बचाने में मानव की सहायता करती है। शान्ति की अवधारणा के विभिन्न अर्थ हैं–युद्ध की अनुपस्थिति, मन की शान्ति एवं शोषण तथा अन्याय से मुक्ति।

शान्ति शिक्षा वह विज्ञान है जो मानव की मौलिक आवश्यकताओं तथा समाज की यथार्थ प्रकृति या स्वरूप का अध्ययन करता है जिसमें इन आवश्यकताओं की पूर्ति होती है। यह शिक्षा या विज्ञान लोगों को मानव अधिकारों के विषय में जागरूक बनाता है। शान्ति शिक्षा वह शिक्षा है जो अशोषित, अहिंसक तथा न्यायप्रिय समाज का निर्माण करती है।

के0एस0 बासवराज के अनुसार, ''शान्ति शिक्षा एक कार्यक्रम एवं प्रक्रिया है जिससे लोगों (नवयुवक तथा प्रौढ़ों) में शान्ति के मूल्य की सराहना तथा समझदारी की भावना का विकास किया जाता है। यह वह तैयारी है जिससे सामुदायिक जीवन को न्यायप्रिय, व्यवस्थित तथा सामंजस्यपूर्ण बनाया जाता है।''

डा0 मर्सी अब्राहम– ''शान्ति शिक्षा शान्तिप्रिय लोगों के लिये शिक्षा है जो कि इस पृथ्वी पर शान्ति कायम करने के योग्य होंगे।..... यह विशेषतः भावात्मक शिक्षा है। यह धार्मिक शिक्षा है। साथ ही यह स्वयं में शिक्षा है।''

डा0 पी0वी0 नायर ने शान्ति शिक्षा के निम्नलिखित तीन उद्देश्यों पर बल दिया है–

1. छात्रों को धार्मिक सहिष्णुता, अन्य प्रजातियों का आदर तथा धार्मिक एवं नैतिक मूल्यों को आदर की दृष्टि से देखने के योग्य बनाना।
2. छात्रों में उदार मस्तिष्क, विवेकपूर्ण चिन्तन तथा विश्वव्यापी ज्ञान की खोज के लिये रूचि विकसित करना।
3. छात्रों में सह–अस्तित्व की भावना का विकास करना।

प्रो0 के0एस0 बासवराज ने शान्ति शिक्षा के निम्नलिखित उद्देश्यों पर बल दिया है–

1. शान्तिप्रिय मानव के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण विकसित करना।
2. मानव जीवन में शान्ति के मूल्य को समझने तथा उसकी सराहना करने के लिये छात्रों को तत्पर बनाना।
3. नवयुवकों में शान्ति के आध्यात्मिक मूल्य को विकसित करना जिससे उनमें आन्तरिक शान्ति या मन की शान्ति प्राप्त हो सके।
4. बच्चों में उपयुक्त एवं अनुपयुक्त, न्याय एवं अन्याय के विषय में जागरूकता विकसित करना।
5. छात्रों में अन्तर्राष्ट्रीय सद्भावना तथा भ्रातृत्व का विकास करना।
6. युद्ध, हिंसा, संघर्ष आदि के परिणामों से अवगत कराना जिससे वे उनसे बचने के लिये कदम उठाने में समर्थ हो सकें।
7. छात्रों को परिवार, देश तथा विश्व में शान्ति कायम रखने में उनकी भूमिका के प्रति जागरूक बनाना।

अनौपचारिक शिक्षा प्रणाली में शान्ति शिक्षा के पाठ्यक्रम में निम्नलिखित क्षेत्रों को स्थान प्रदान किया जाना चाहिए–

शान्तिवाद की अवधारणा

यह सिद्धान्त शान्ति में आस्था तथा युद्ध के प्रति घृणा पर आधारित है। यह मानव जीवन की पवित्रता में आस्था रखता है।

शान्ति–शक्ति

गाँधीजी का 'सत्याग्रह' तथा विनोबा भावे का भूदान आन्दोलन इस सिद्धान्त पर आधारित है। अतः इनका ज्ञान दिया जाय।

विश्व मानव की अवधारणा

यह सिद्धान्त विश्व नागरिकता तथा व्यापक अन्तर्राष्ट्रीयता पर आधारित है। इसमें संकुचित राष्ट्रवाद के दोषों एवं दुष्परिणामों को बताकर विश्व नागरिकता की स्थापना पर बल दिया जाय।

आर्थिक आत्मनिर्भरता तथा उत्पादन का विक्रेन्द्रीकरण

इसमें गाँधीजी के आर्थिक दर्शन का ज्ञान कराया जाय और उनके 'सर्वोदय समाज' की कल्पना को बताया जाय। साथ ही 'अपरिग्रह' के सिद्धान्त से अवगत कराया जाय।

नागरिक शिक्षा

शक्ति का लोकतांत्रिक विक्रेन्द्रीकरण

इसमें प्लेटों के नगर–राज्यों, गांधीजी के 'ग्राम्य राज' तथा विनोबा भावे के 'ग्रामदान' की अवधारणाओं से व्यक्तियों को अवगत कराया जाय।

विभिन्न शिक्षाविदों का मत है कि शान्ति शिक्षा को विद्यालयों, कालेजों तथा विश्वविद्यालयों में एक अतिरिक्त विषय के रूप में प्रतिपादित नहीं किया जाना चाहिए वरन् विभिन्न विषयों के पाठ्यक्रमों का ऐसे ढंग से पुनर्गठन किया जाय कि विश्वशान्ति विद्यालय के पाठ्यक्रम पाठ्य सहगामी क्रियाओं तथा कार्यानुभवों का एक अभिन्न अंग बन जाय। इनके माध्यम से छात्र स्वयं को विश्व का एक अभिन्न अंग मानना सीख जायेंगे, पाठ्यक्रम में निहित शान्ति

विषयों का अध्यापन औपचारिक ढंग से किया जा सकेगा। इसके अतिरिक्त छात्रों को विश्वशान्ति, विश्व–बन्धुत्व, भ्रातृत्व–भावना आदि के प्रति सजग बनाने के लिये जन–संचार के साधनों–रेडियो, टी0वी0, आडियो कैसेट, चलचित्र, समाचार–पत्र एवं पत्रिकाएँ आदि का भी प्रयोग किया जाना चाहिए।

जन–साधारण को शान्ति–संदेश प्रदान करने के लिये ऐच्छिक संगठनों का भी प्रयोग किया जाना चाहिये। इसके लिये शान्ति प्रचार केन्द्रों की स्थापना, शान्ति–सेना का संगठन, 'शान्ति यात्रा' आदि की व्यवस्था की जानी चाहिये। समाज के संघर्षों एवं तनावों को दूर करने के लिये अहिंसक साधनों का प्रयोग किया जाना चाहिये। जनसाधारण को शान्ति–संदेश देने के लिये नुक्कड़ सभाओं का आयोजन किया जाय।

अन्त में, हम डॉ0 सर्वपल्ली राधाकृष्णन के शब्दों में कह सकते हैं– ''सभी धर्म पड़ोसी से प्रेम करने का उपदेश देते हैं, किन्तु प्रेम करने की क्षमता पा सकना कठिन काम है। आध्यात्मिक जीवन का विकास ही वह शक्ति है जो पड़ोसी को प्रेम करने की क्षमता प्रदान कर सकती है, फिर चाहे हम स्वभावतः वैसा न करना चाहें। 'ऐपिसिल ऑफ सेण्ट जेम्स' में कहा गया है, 'तुम्हारे बीच युद्ध और संघर्ष कहाँ से आते हैं? तुम चाहो भी तो तुम्हारे युद्ध यहाँ से (ईश्वर के यहाँ से) नहीं आते।' मानवों की परस्पर विरोधी आकांक्षाओं से ही मानवों में तनातनी और संघर्षों का जन्म होता है। इससे बचने के लिये हमें अपने अन्तर में अनुरूपता रखना आवश्यक है। मानव के आन्तरिक जीवन के ज्ञान से ही सम्पूर्ण मानवता के ऐक्य की अनुभूति की जा सकती है।'' अतः शान्ति शिक्षा के माध्यम से व्यक्तियों को यह अनुभूति करायी जाय कि सभ्यता के विकास में किसी जाति या जाति–समूह का एकाधिकार नहीं रहा है वरन् सभी राष्ट्रों का योगदान रहा है। उनको उनकी उपलब्धियों का मान्यता प्रदान करना सिखाया जाये। इस प्रकार सार्वभौम बन्धुत्व के लिये कदम उठाये जाये। उन्हे धार्मिक मामलों में दूसरे देशों तथा युगों के मनीषियों के योगदान को अवश्य समझाया जाना चाहिये।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. *S.N. Prasad- "Development of Peace Education in India." Research Report published-1998 Peace Education Miniprintts No.-95*
2. *Jagannath Mohanthy -"Modern Trends in Indian Education" Published in 2004, Bhubaneshwar*
3. *Dr. Usha Rao - "Education for Peace" Published by Himalaya Publication-2008*
4. *N.C.E.R.T. -"Education for Peace" N.C.E.R.T. Publication-2006 ISBN 81-7450-610-1.*
5. *Dr. Vasant Vijaji Maharaj -"Peace Education" www.vasant gurudev.com*